एक हरियाणवी कथा

वाह, म्हारे भाई जी, वाह!

म्हारे भाई लखपत राधे जी गंगा किनारे पोंहच ते गए। पण वहाँ पे घणे-सारे पाँडे घूमण लाग रे थे। ओ सारे इश्नान करण आल्याँ ते दान-दखणा वसूलें थे। भाई जी गंगाजी में डुबकी ले लाणा चाहवें थे। पण ओ ते पाई-पाई ने दाँता तले दबा के राख्या करें हैं। ओ किसे पाँडे ने दान क्यूँ देण लागे?

सो, भाई जी गंगा-जी के किनारे-किनारे चालते गए। घणी दूर जाके चारूँ तरफ देखण लागे। ईब वहाँ पे कोणे जी पाँडा न दीखे था।

भाई जी ने आव देख्या न ताव झटन्दे सी गंगा-जल में कूदगे। डुबकी ला के ज्यूँ ही उनने पाणी ते गरदन बाहर निकाड़ी ते के देख्या। एक तिलकधारी पाँडा उनके कत्ती याहमणे खड़या था!! भाई जी ने सोच्या, "यो पाणी में कहाँ ते आ टपकयो!"

उधर, पाँडा जी ने घणी-ए फुर्ती दखाई। उनने देखते-ई-देखते पाणी में डुबकी ला दी। एक सकंड में बाहर बी आ गए वो। ईब उनके एक हाथ में गंगा जी की तली का थोड़ा-सा कीचड़ था।

भाई जी के माथे पे उस कीचड़ का तिलक ला के उसने कहया,

"गंगा जी का कीचड़ से,
इसने तिलक-रूप तूँ मान।"

यो सुणते-ई भाई जी ने बी गंगा-जल में डुबकी ला टी। बाहर आए ते उनके दाँए हाथ में एक छोटी-सी मिंडकी थी। उनने पिंडत-जी के हाथ में ओ मिंडकी रखी और बोल उठे,

"गंगा-जल की मिंडकी सै,
मेरी दसणा इसे लेओ माण।"

– सुखदेव मल्होत्रा

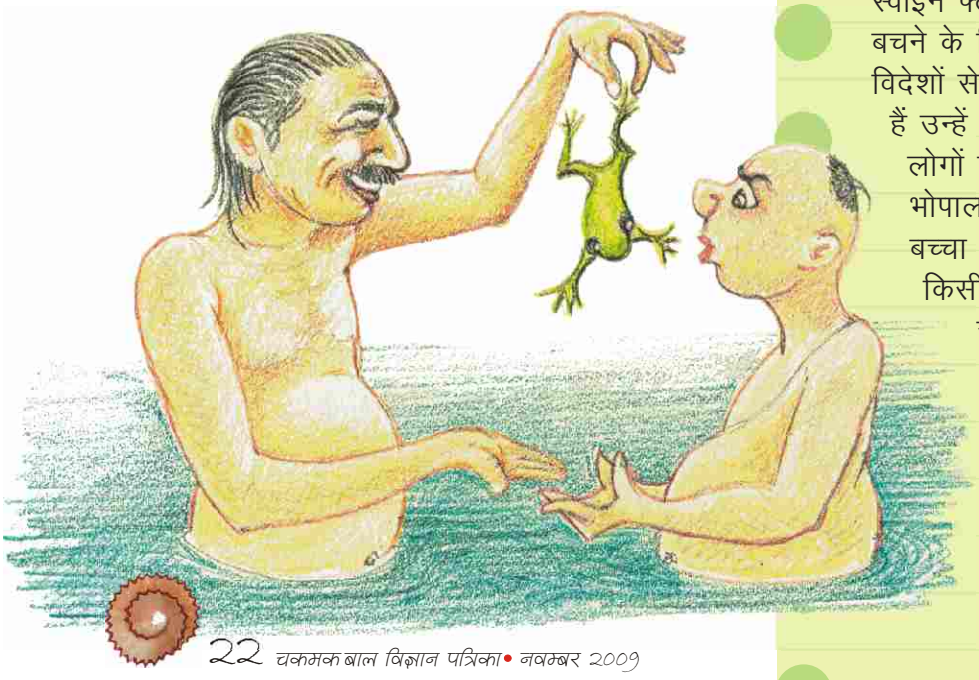

मेरा पन्ना

–रुकसार शाह, आठ साल, देवास

क्या कहूँ...

सब बच्चे अपनी क्लास में चले गए थे। और मैं भी चला गया था। और रीनू भी आ गई थी। मैडम जी कुछ पढ़ने वाली थीं कि सर आ गए। मैंने सर से हाथ मिलाया। सर ने कहा, "सब बच्चे चुप हो जाएँ।" सब बच्चे चुप हो गए। वे बताने लगे कि रात और दिन क्यों होते हैं। किसी ने कहा दिन सूरज और रात चाँद निकलने के कारण होते हैं। किसी का भी सही नहीं निकला। सर ने कहा कि रात और दिन इसलिए होते हैं कि पृथ्वी सूरज के चक्कर लगाती है। सर ने समझाया कि इसे ऐसे याद रखना और बोले इसे उतार लो। सब बच्चे उतारने लगे। रीनू भी उतारने लगी। और मैं भी उतारने लगा। रीनू और मेरा जल्दी हो गया। सर किताब पढ़ रहे थे और मैं रीनू की तरफ देख रहा था। रीनू मेरी तरफ देख रही थी।

– दिनेश घावरी, सातवीं, भोपाल

स्वाइन फ्लू

स्वाइन फ्लू एक बहुत बड़ी घातक बीमारी है। इससे बचने के लिए लोगों को मास्क दिए गए हैं। यह विदेशों से आई है। अमरीका से जो भी मेहमान आते हैं उन्हें यह बीमारी हो जाती है। इस बीमारी से तीन लोगों की मौत हो चुकी है। और यह बीमारी भोपाल तक पहुँच सकती है। कल एक मासूम बच्चा डॉक्टर से इसकी जानकारी लेने आया था। किसी को नहीं पता कि यह बीमारी कैसे होती है। स्वाइन फ्लू ने पिछले 24 घण्टे में तीन और लोगों की जान ली है। इन्हें दिल्ली पहुँचाया गया है। कल इसने दिल्ली में एक मासूम बच्चे की जान ले ली। मरने वालों में पुणे में पढ़ाई कर रहे छात्र-छात्राएँ भी शामिल हैं।

– शिवम यादव, होशंगाबाद, म. प्र.

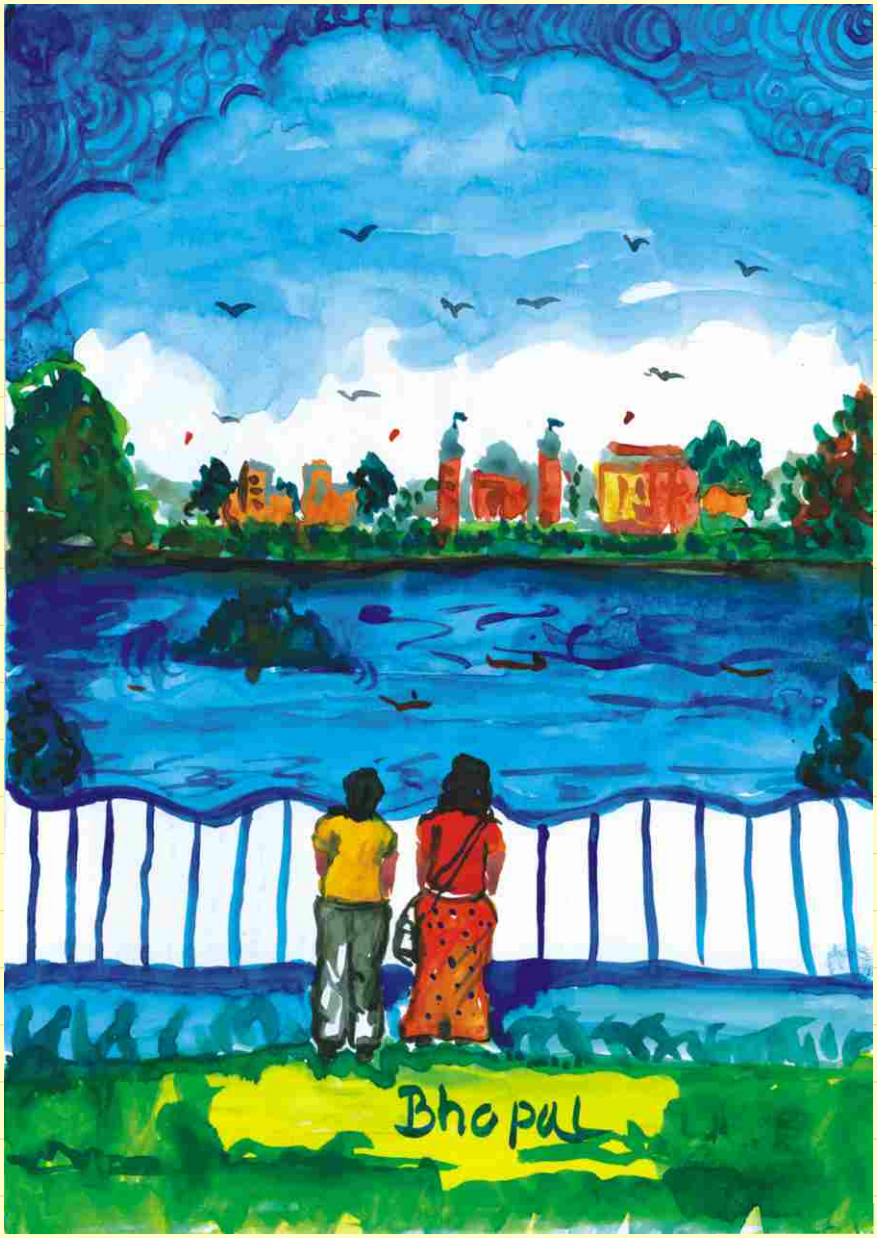

— राहुल गौतम कस्बे, बारहवीं, भोपाल म. प्र.

एक बार की बात

एक बार की बात है। हमारे गाँव में हमारे पड़ोसी की शादी थी। हम उहाँ खाना खाने गए। हमने खाना खाया और फिर रात हो गई। तो बारात आने का टाइम था। आधे बाराती आ चुके थे और उन्होंने नाश्ता भी किया। तभी शहनाई आ गई। और एक तम्बू से टकराकर उसमें आग लग गई। तभी सब बोले कि यह हमारे गाँव की बारात नहीं है। हमारे साइड के गाँव वाले सारे भागते-भागते जा रहे थे। तो दो आदमियों को चक्कर आ गया। उनको हॉस्पिटल भिजवाया। शहनाई वाले छोटे-छोटे तेरह-तेरह साल के बच्चे पिचलकर मर गए। एक लड़की की माँ नहीं थी। उसके पापा-भाई भी उसी ट्रॉली में थे। वह अकेली रह गई। फिर पता चला कि यह हमारे शहनाई वाले हैं। फिर उनका इलाज करवाया और फिर शादी हो गई।

— राहुल गोस्वामी, होशंगाबाद, म. प्र.

चिप्पल चोर

चोर-चोर-चोर चिप्पल चोर
चोर ने चोरे चिप्पल
जल्दी पकड़ो चोर को
बेचेगा वो चिप्पल
पैसे आएँगे उसपर
ऐश करेगा जीभरकर

—प्रमोद यादव, चौथी, मालाखेड़ी, म. प्र.

मेरी छुट्टियाँ...

आज मैं बहुत खुश थी क्योंकि गर्मी की छुट्टियाँ लगने वाली थीं। मैं घूमने आगरा गई थी। वहाँ पर मैंने जाना कि वह चीज़ कितनी सुन्दर है क्योंकि वह संगमरमर से बना था। वहाँ पर शाहजहाँ ने अपनी रानी के लिए महल बनवाया। इतने में मेरी छुट्टी खत्म हो गई थी। और मैं वापस आ गई थी। मैं जहाँ भी घूमने गई मुझे बहुत मज़ा आया। फिर बाद में पता चला कि वो तो एक सपना था। और मैं सपने को ही हकीकत समझने लगी।

— रुचिका रघुवंशी, सातवीं

— दामिनी